प्रश्न 2—प्रकार्यवाद को जान ड्यूई का योगदान बतलाइये।

Describe the contribution of John Dewey to functionalism.

उत्तर— जॉन ड्यूई का योगदान

(Contribution of John Deney)

ड्यूई प्रकार्यवाद के संस्थापकों में से एक हैं। इसने एंजेल के साथ मिलकर प्रकार्यवाद सम्प्रदाय का आरम्भ किया था।

ड्यूई उपयोगिता पर बहुत बल देता था। वह कहता था कि मनोविज्ञान का अध्ययन इसलिये किया जाना चाहिये क्योंकि इसका अध्ययन समाज और व्यक्ति दोनों के लिये उपयोगी है। मनोविज्ञान के अध्ययन के द्वारा व्यक्ति और समाज की समस्याओं को सुलझाया जा सकता है। ड्यूई का दृष्टिकोण फलवादी (Pragmatic) था क्योंकि वह फलवादी दर्शन में विश्वास रखता था। यह उल्लेखनीय है कि फलवादी दृष्टिकोण का ही आधार प्रकार्यवाद है।

1. मानसिक कार्यों में निरन्तरता (Continuity in Mental Function)— प्रकार्यवाद की यह मान्यता है कि मानसिक कार्यों में निरन्तरता (Continuity) होती है। इस पर ड्यूई ने ही सर्वप्रथम प्रकाश डाला था। ड्यूई ने बताया था कि मानसिक कार्यों में निरन्तरता होती है और उनका प्रकार्य भी होता है। ड्यूई ने मानसिक तत्वों के प्रकार्य पर बल दिया और यह नहीं माना कि इनके योग से मन और चेतना बनते हैं। उसने माना कि मानसिक क्रिया निरन्तर होती रहती है और कभी भी ऐसी अवस्था नहीं आती जबकि यह माना जाये कि एक कार्य समाप्त हो गया और दूसरा आरम्भ। जल की धारा के समान मानसिक क्रियायें भी प्रभावित होती हैं। इसके अतिरिक्त मानसिक क्रियाओं का उद्देश्य भी अवश्य होता है। प्रत्येक मानसिक क्रिया में व्यक्ति की कोई न कोई इच्छा अवश्य पूरी होती है। इस तथ्य

Scanned with CamScanner

को सिद्ध करने के लिये उसने एक बालक का उदाहरण दिया जिसका हाथ जल जाता है। बालक का आग को देखना, वहाँ तक पहुँचना और फिर जल जाना इन तीनों क्रियाओं में क्रम है। ये इतनी तीव्र गति से होती हैं कि इन्हें पृथक् नहीं किया जा सकता। इसी तथ्य के आधार पर ड्यूई ने प्रतिवर्त वृत्ताँश (Reflex Arc) की संकल्पना में भी निरन्तरता पर बल दिया और यह बतलाया कि प्रतिवर्त वृत्ताँश को भागों में विभक्त करके अध्ययन करना गलत है इस विषय में उसने जो विचार प्रस्तुत किये वे प्रकार्यवाद के प्रारम्भ के द्योतक हैं।

2. उद्दीपन और अनुक्रिया (Stimulus and Response)—उद्दीपन और अनुक्रिया के बारे में ड्यूई ने बतलाया है कि ये भी निरन्तर होते हैं। सुविधा के दृष्टिकोण से मनोविज्ञान में हम इनको पृथक्-पृथक् सम्बोधित करते हैं। वैसे यह जानना असम्भव है कि कहाँ पर उद्दीपन समाप्त होता है और कहाँ पर अनुक्रिया आरम्भ होती है। इन दोनों का स्वरूप प्रकार्यमूलक है और वे संयुक्त रहते हैं तथा निरन्तर घटित होते रहते हैं।

3. पर्यावरण में समंजन (Adjustment in Environment)—ड्यूई ने जीव और उसके पर्यावरण के बीच प्रकार्यमूलक सम्बन्ध मानते हुये बतलाया है कि जीव की समस्त मनोवैज्ञानिक चेष्टायें पर्यावरण से समंजन स्थापित करने का प्रयास मात्र हैं। समस्त मानसिक कार्यों के उद्देश्य होते हैं और इसीलिये मानसिक प्रकार्यों पर बल दिया जाता है। उदाहरण के लिये बुद्धि को ही लीजिये। ड्यूई ने बुद्धि को केवल एक मानसिक योग्यता ही नहीं माना वरन् यह माना है कि बुद्धि भविष्य विषयक कार्यों में व्यवस्था (Order) और निदेशक (Direction) लाने का प्रयास करती है। इसीलिये इसका सम्बन्ध निर्णय (Decision) के नियमों और सिद्धान्तों से है। यही है बुद्धि की प्रकार्यवादी व्याख्या।

अन्त में जॉन ड्यूई के कार्यों के विषय में यह कहा जा सकता है कि वे प्रकार्यवाद के केवल प्रारम्भिक स्वरूप पर प्रकाश डालते हैं और उतनी स्पष्ट व्याख्या नहीं करते जितनी एंजेल के द्वारा हुई। इस सम्बन्ध में यह उल्लेखनीय है कि ड्यूई और उसके सहयोगियों ने प्रकार्यवाद संगठित करने के लिये ही कार्य नहीं किये थे। वास्तव में इस प्रकार का सम्प्रदाय स्थापित करने की ओर उनकी रुचि नहीं थी। परन्तु अन्य मनोवैज्ञानिकों ने इसे प्रकार्यवाद का नाम दे दिया।

प्रश्न 3—प्रकार्यवाद को जेम्स रोलैण्ड एंजेल का योगदान क्या है ?

What is the contribution of James Rolland Angell to functionalism ?

उत्तर— जेम्स रोलैंड एंजेल का योगदान

(Contribution of James Rolland Angell)

प्रकार्यवादी मनोविज्ञान के विकास में एंजेल का महती योगदान है। वास्तव

Scanned with CamScanner

में एंजेल और ड्यूई के विचारों से ही प्रकार्यवाद प्रारम्भ हुआ था। संक्षेप में प्रकार्यवादी मनोविज्ञान में एंजेल का कार्य निम्नलिखित है—

1. संरचनावाद और प्रकार्यवाद में अन्तर (Distinction between structuralism and functionalism)—एंजेल ने बतलाया कि प्रकार्यवाद का सम्बन्ध प्रक्रिया (Process) से है। अतः यह संरचनावाद (Structuralism) से पृथक् है जिसका सम्बन्ध 'अन्तर्वस्तु' (Content) से है। प्रकार्यवाद में यह जानने के लिये अध्ययन किया जाता है कि मानसिक तत्व की प्रक्रिया क्या है। दूसरी ओर संरचनावाद में अध्ययनकर्त्ता मानसिक तत्वों के विश्लेषण पर ही अपना ध्यान केन्द्रित करता है। संरचनावाद की यह मान्यता है कि मानसिक तत्व एक प्रकार से निश्चित होते हैं और उनमें परिस्थिति के अनुसार समंजन करने की क्षमता नहीं होती। दूसरी ओर प्रकार्यवाद में यह माना जाता है कि मानसिक क्रियाओं में परिस्थिति के अनुसार समंजन की शक्ति होती है। ये मानसिक क्रियायें केवल पुनरावृत्ति ही नहीं होती। ये उद्देश्यपूर्ण होती हैं। परिस्थितियों के अनुसार समस्त मानसिक क्रियाओं में कोई गतिरोध (Obstacle) नहीं होता और इनमें निरन्तरता होती है। मानव के मन में जो विभिन्न प्रत्यय और संकल्पनायें विकसित होती हैं, वे परिस्थितियों के अनुसार अपना कार्य करती हैं।

2. उपयोगिता पर बल (Emphasis on Utility)—प्रकार्यवादी सम्प्रदाय उपयोगिता पर बल देता है। इसकी मान्यता है कि मनोविज्ञान का अध्ययन केवल अध्ययन के लिये न होकर इस दृष्टि से किया जाये कि इसके अध्ययन से क्या लाभ प्राप्त होगा। यूं तो मनोविज्ञान के अध्ययन का कोई न कोई उद्देश्य होता है परन्तु प्रकार्यवाद में यह माना गया है कि यह उद्देश्य लाभदायक होता है। मनोविज्ञान का अध्ययन इसलिये किया जाता है कि व्यक्ति की कुशलता में वृद्धि हो सके। व्यवहृत मनोविज्ञान (Applied Psychology) इसी दृष्टिकोण पर आधारित है और इसी के फलस्वरूप इसका तीव्रगति से विकास हुआ। यह ज्ञात हुआ कि शिक्षा व उद्योग (Education & Industry) के क्षेत्र में मनोविज्ञान उपयोगी है।

3. मानसिक क्रियायें (Dental Activities)—यह तो बतलाया ही जा चुका है कि मानसिक क्रियायें निरन्तर होती हैं और इनमें कोई न कोई उद्देश्य निहित होता है। एंजेल ने यह बतलाया कि प्रकार्यवाद का विषय यह जानना है कि कोई मानसिक क्रिया "कैसे" (How) होती है और "क्यों" (Why) होती है ? मानसिक क्रिया "क्या" (What) होती है यह तो संरचनावाद में अध्ययन किया गया था किन्तु 'क्यों और कैसे' का वहाँ अध्ययन नहीं किया गया। अतः प्रकार्यवाद की विषय वस्तु यह जानना है कि कोई मानसिक क्रिया "क्यों और कैसे" होती है।

अन्त में एंजेल के कार्यों का मूल्यांकन करते हुए यह कहा जा सकता है कि उसने प्रकार्यवाद के स्वरूप की व्याख्या की और इस समस्या पर प्रकाश डाला कि प्रकार्यवाद क्या है, इसकी विषय वस्तु क्या है ? इसके अतिरिक्त उसने मनोविज्ञान

Scanned with CamScanner

के अध्ययन की उपयोगिता पर बल दिया और यह बतलाया कि मनोविज्ञान का अध्ययन बहुत उपयोगी है। मन और शरीर को पृथक्-पृथक् न मानते हुये उसने इन्हें एक माना और इस तथ्य पर प्रकाश डाला कि ये बाह्य दृष्टि से अलग-अलग प्रतीत होते हैं, परन्तु वास्तव में एक ही हैं। समस्त मानसिक क्रियायें दोनों के योग से बनती हैं।

प्रश्न 4—प्रकार्यवाद को हार्वे कार के योगदान का विवेचन कीजिये।

Discuss the contribution of Harvey A. Carr to functionalism.

उत्तर—

हार्वे ए० कार का योगदान
(Contribution of Harvey A. Carr)

प्रकार्यवाद का आरम्भ किया था ड्यूई और एंजेल ने परन्तु प्रकार्यवाद को प्रौढ़ता हार्वे कार की अध्यक्षता में हुई। हार्वे कार ने बड़ी तत्परता के साथ प्रकार्यवादी आन्दोलन का प्रसार किया और शिकागो में मनोविज्ञानशाला के अध्यक्ष पद पर रहते हुये प्रकार्यवाद का विकास किया। सन् 1925 में उसने प्रकार्यवाद पर एक पुस्तक भी प्रकाशित की और स्पष्ट रूप से प्रकार्यवादी मनोविज्ञान की व्याख्या की। संक्षेप में, हार्वे ए० कार का प्रकार्यवादी मनोविज्ञान में योगदान निम्नलिखित है—

1. मानसिक क्रिया (Mental Activity)—हार्वे कार के अनुसार मानसिक क्रिया एक ऐसा प्रत्यय है जो कि प्रत्यक्ष ज्ञान, स्मृति, चिन्तन, इच्छाशक्ति, निर्णय इत्यादि मानसिक क्रियाओं का द्योतक है। इस प्रकार कार ने मानसिक क्रिया में शारीरिक तत्व को भी सम्मिलित किया है। दूसरे शब्दों में, मानसिक क्रिया से तात्पर्य व्यक्ति की शारीरिक और वैज्ञानिक शक्तियों के सम्मिलित स्वरूप से है। मानसिक क्रिया के स्वरूप के विषय में कार ने लिखा है—"मानसिक क्रिया ऐसी क्रिया है जो ग्रहण, निश्चयीकरण, धारणा, संगठन अनुभवों का मूल्यांकन और आचार के निर्देशन में इसकी उपयोगिता से सम्बन्ध रखता है।"

हार्वे कार के शब्दों से यह स्पष्ट होता है कि मानसिक क्रिया उद्देश्यपूर्ण होती है और उसका लक्ष्य व्यक्ति के जीवन में तथा कार्य में समंजन लाना है।

2. मन और शरीर (Mind and Body)—यद्यपि सैद्धान्तिक रूप से मन और शरीर का उल्लेख दो भिन्न रूपों में किया जाता है परन्तु हार्वे कार ने प्रकार्यवाद में इनमें अभिन्न सम्बन्ध माना है। समस्त मानसिक क्रियायें इन दोनों पर आधारित होती हैं। कार ने इस तथ्य पर बल दिया कि 'मानसिक' का तात्पर्य व्यवहार के मनोवैज्ञानिक और शारीरिक दोनों पक्षों से है। अतः व्यवहार के अध्ययन के लिये मनोवैज्ञानिक और शारीरिक आधारों पर ध्यान देना आवश्यक है। इस प्रकार प्रकार्यवादी सम्प्रदाय ने मनोविज्ञान में जीव विज्ञान (Biology) का समावेश किया और मनोविज्ञान के क्षेत्र का विस्तार किया।

Scanned with CamScanner

3. **समंजनमूलक व्यवहार** (Adjustment Behaviour)—कार ने मानसिक क्रिया को समंजनमूलक व्यवहार माना है। समंजनमूलक व्यवहार में अभिप्रेरक उद्दीपन (Motivating Stimulus) होता है। कार ने इसको समंजनमूलक व्यवहार का प्रथम गुण माना है। इस प्रकार उसने अभिप्रेरक (Motivation) की ओर ध्यान दिया और इसकी व्याख्या की। उसके अनुसार प्रेरक (Motive) एक ऐसा निरन्तर उद्दीपन है जोकि व्यक्ति के व्यवहार को तब तक प्रेरित किये रहता है जब तक कि अभीष्ट कार्य पूर्ण नहीं हो जाता। अतः अभिप्रेरक उद्दीपन से व्यक्ति के कार्य और व्यवहार की दिशा का निर्धारण होता है। समंजनमूलक व्यवहार तब तक बना रहता है जब तक कि सम्बन्धित कार्य पूर्ण नहीं हो जाता। कार के अनुसार समंजन-मूलक व्यवहार उद्दीपन वस्तु को किसी न किसी रूप में प्रभावित करता है।

4. **पर्यावरण का महत्व** (Value of Environment)—कार ने पर्यावरण के बारे में बतलाया कि पर्यावरण की परिस्थितियाँ भी व्यक्ति को कार्य के लिये प्रेरित करती हैं। पर्यावरण में ऐसी-ऐसी परिस्थितियाँ पाई जाती हैं जो भिन्न-भिन्न कार्यों के लिये प्रेरित करती हैं। प्रकार्यवाद में पर्यावरण सम्बन्धी परिस्थितियों के अध्ययन की ओर भी पर्याप्त ध्यान दिया जाता है।

व्यक्ति को अपने समंजन के लिये अपने पर्यावरण में ऐसा परिवर्तन लाना पड़ता है जो उसे विशेष संतोष प्रदान कर सके। जब कोई व्यक्ति किसी विशेष कार्य-के लिये उद्यम करता है तब यह कहा जा सकता है कि उसका उद्देश्य अपने पर्यावरण से ऐसा परिवर्तन लाना है जो कि उसे संतोष प्रदान कर सके।

अन्त में यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि हार्वे ए० कार ने प्रकार्यवाद के विकास के लिये बहुत कुछ किया। उसने प्रकार्यवाद को जो एंजेल के समय किशोरावस्था में था और जिसका सम्बन्ध तब तक संरचनावाद से जोड़ा जाता था, प्रौढ़ावस्था में पहुँचाया और प्रकार्यवाद की इस प्रकार व्याख्या की कि यह पृथक् सम्प्रदाय के रूप में निर्विवाद रूप से समकालीन मनोवैज्ञानिकों द्वारा मान लिया गया।

Scanned with CamScanner